OPEN ACCESS

Ind. Jr. of Mod. Res. and Rev | *PEER-REVIEWED JOURNAL* | *Volume 4 Issue 9 [Sep] Year 2026*

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र (घरेलू श्रमिक) में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन

Vijay Prakash Meena [1*], Dr. Hemlata Mahawar [2]

[1] Research Scholar, Department of Sociology, Faculty of Social Science, University College of Social Sciences and Humanities, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India

[2] Associate Professor, Department of Sociology, Maharana Pratap Government PG College, Chittorgarh Affiliated to: Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author: * Vijay Prakash Meena

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22703525

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान के अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। घरेलू महिला श्रमिक परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं, किंतु उनका कार्य प्रायः अनौपचारिक होने के कारण कम वेतन, कार्य की अनिश्चितता, अधिक कार्यभार तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी चुनौतियों से प्रभावित होता है। अध्ययन में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, कार्य एवं आर्थिक स्थिति, सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा निर्णय लेने की क्षमता का विश्लेषण किया गया है। शोध में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया तथा अजमेर जिले की 100 घरेलू महिला श्रमिकों को अध्ययन के नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु आवृत्ति एवं प्रतिशत पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव परिवार में उनकी भूमिका, सामाजिक सम्मान, आत्मविश्वास तथा निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता पर भी पड़ सकता है। साथ ही कम वेतन, अधिक कार्यभार, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, समय की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा भविष्य की आर्थिक असुरक्षा जैसी चुनौतियाँ भी महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती हैं। अध्ययन घरेलू महिला श्रमिकों के सामाजिक सशक्तिकरण के लिए आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक संरक्षण, सम्मानजनक कार्य परिस्थितियों तथा निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-08-2026
- **Accepted:** 02-09-2026
- **Published:** 11-09-2026
- **MRR:**4(9); 2026: 112-124
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

Meena V, Mahawar H. अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र (घरेलू श्रमिक) में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(9):112-124.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: घरेलू महिला श्रमिक, असंगठित क्षेत्र, सामाजिक स्थिति, महिला सशक्तिकरण, निर्णय प्रक्रिया, अजमेर जिला।

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति सदैव परिवर्तनशील रही है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ महिलाओं की भूमिका में निरंतर विस्तार हुआ है। परंपरागत रूप से महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों एवं परिवार की देखभाल तक सीमित मानी जाती थी, किंतु आधुनिक समय में शिक्षा के प्रसार, नगरीकरण, औद्योगीकरण, आर्थिक आवश्यकताओं तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि के कारण महिलाएँ विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं। महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी केवल आर्थिक आवश्यकता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उनके आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान तथा निर्णय लेने की क्षमता से भी जुड़ी हुई है (कुमुद शर्मा एट अल., 2018)। भारत में महिला श्रम शक्ति का एक बड़ा भाग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। असंगठित क्षेत्र की प्रमुख विशेषताओं में रोजगार की अनिश्चितता, निश्चित कार्य समय का अभाव, सीमित वेतन तथा सामाजिक सुरक्षा और अन्य श्रम सुविधाओं की कमी शामिल है। घरेलू श्रमिक इस क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। घरेलू महिला श्रमिक विभिन्न परिवारों के घरों में साफ-सफाई, भोजन बनाना, कपड़े धोना, बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल तथा अन्य घरेलू कार्यों में संलग्न रहती हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी घरेलू कार्य को महिलाओं के रोजगार एवं असंगठित श्रम संरचना से जुड़े एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2021)।

घरेलू महिला श्रमिकों की स्थिति सामान्यतः दोहरे दायित्वों से प्रभावित होती है। एक ओर वे अपने परिवार की घरेलू एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं और दूसरी ओर आय अर्जित करने के लिए अन्य परिवारों के घरों में कार्य करती हैं। इस कारण उन्हें घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। परिणामस्वरूप समय की कमी, कार्यभार की अधिकता, शारीरिक थकान तथा पारिवारिक तनाव जैसी चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके बावजूद रोजगार से प्राप्त आय महिलाओं की आर्थिक निर्भरता को कम करने तथा परिवार की आर्थिक स्थिति में योगदान देने का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनती है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति को केवल उनकी आय के आधार पर नहीं समझा जा सकता। सामाजिक स्थिति एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें परिवार में सम्मान, समाज में पहचान, आत्मविश्वास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक सहभागिता तथा पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। जब कोई महिला आर्थिक रूप से परिवार में योगदान देती है, तो उसके प्रति परिवार के दृष्टिकोण और उसकी भूमिका में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। आय अर्जित करने वाली महिला बच्चों की शिक्षा, घरेलू खर्च तथा अन्य पारिवारिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती है। महिला सशक्तिकरण के अध्ययन में आर्थिक सहभागिता एवं निर्णय लेने की क्षमता को महत्त्वपूर्ण संकेतक माना गया है (बाटलीवाला, 1994; कबीर 1999)।

घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि आर्थिक योगदान के बावजूद उन्हें सदैव समान सामाजिक सम्मान, सुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ एवं उचित व्यवहार प्राप्त नहीं होता। घरेलू कार्य की प्रकृति व्यक्तिगत घरों से संबंधित होने के कारण कार्य के घंटे, कार्य की मात्रा तथा रोजगार की शर्तें प्रायः अनौपचारिक होती हैं। अनेक महिलाओं को कम वेतन, अनिश्चित कार्य समय, अवकाश की कमी तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। घरेलू श्रमिकों के लिए कार्य की गरिमा और सामाजिक सुरक्षा को महत्त्वपूर्ण मुद्दे के रूप में स्वीकार किया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। रोजगार के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ घरेलू महिला श्रमिकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। कम वेतन, अधिक कार्यभार, समय की कमी, स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयाँ, कार्यस्थल तक पहुँचने की समस्या तथा सामाजिक सुरक्षा का अभाव उनके जीवन को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त भविष्य की चिंता, बच्चों की देखभाल, शिक्षा की सीमाएँ तथा बेहतर रोजगार की आकांक्षा भी उनकी सामाजिक स्थिति और जीवन की संभावनाओं को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 100 घरेलू महिला श्रमिकों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया है। उनसे प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर उनकी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं कार्य संबंधी परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन विशेष रूप से महिलाओं की रोजगार संबंधी स्थिति तथा उनके सामाजिक जीवन में आए परिवर्तनों के मध्य संबंध को समझने का प्रयास करता है। इस प्रकार यह शोध घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण तथा उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों का एक समग्र एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

2. अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य

भारत में असंगठित क्षेत्र महिलाओं के लिए रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है, किंतु घरेलू महिला श्रमिकों को कम वेतन, अनिश्चित कार्य समय, अधिक कार्यभार तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक योगदान के बावजूद उनकी सामाजिक स्थिति, सम्मान एवं निर्णय लेने की क्षमता में समान रूप से वृद्धि होना आवश्यक नहीं है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। अजमेर जिले के संदर्भ में यह अध्ययन घरेलू महिला श्रमिकों की कार्य एवं आर्थिक स्थिति, सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास तथा निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी का विश्लेषण करता है। साथ ही कम वेतन, स्वास्थ्य समस्याओं, पारिवारिक जिम्मेदारियों एवं भविष्य की चिंताओं जैसी चुनौतियों का भी अध्ययन किया गया है। इस प्रकार शोध रोजगार और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है (कबीर 1999; बाटलीवाला, 1994)।

2.1 अध्ययन की समस्या

अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्या है। घरेलू महिला श्रमिक परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में योगदान देती हैं, फिर भी उन्हें प्रायः कम वेतन, अनिश्चित रोजगार, अधिक कार्यभार, निश्चित कार्य समय के अभाव तथा सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रोजगार से महिलाओं की आर्थिक निर्भरता कम होने और आत्मविश्वास में वृद्धि की संभावना होती है, किंतु यह आवश्यक नहीं है कि आर्थिक योगदान के साथ उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में समान रूप से वृद्धि

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हो। घरेलू कार्य की अनौपचारिक प्रकृति के कारण महिलाओं को कार्यस्थल पर सुरक्षा, सम्मानजनक व्यवहार, अवकाश तथा भविष्य की आर्थिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भी प्रभावित करती हैं। साथ ही, उन्हें अपने रोजगार के साथ पारिवारिक एवं घरेलू जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है। अतः अध्ययन की प्रमुख समस्या यह जानना है कि घरेलू श्रमिक के रूप में कार्य करने से अजमेर जिले की महिलाओं की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक दृष्टिकोण, सामाजिक सम्मान, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वास्तव में किस प्रकार का परिवर्तन आया है तथा उनके समक्ष कौन-कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

2.2 अध्ययन के उद्देश्य

शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना है। अध्ययन के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, कार्य की प्रकृति, आय एवं कार्य परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही रोजगार के कारण उनके सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, जीवन स्तर तथा सामाजिक सहभागिता में हुए परिवर्तन का परीक्षण किया जाएगा। महिलाओं की पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया, बच्चों की शिक्षा एवं घरेलू खर्च में उनकी भूमिका का भी अध्ययन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त कार्यभार, कम वेतन, सामाजिक सुरक्षा के अभाव, स्वास्थ्य समस्याओं एवं अन्य चुनौतियों का विश्लेषण कर महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के प्रमुख कारकों को समझने का प्रयास किया जाएगा (कबीर 1999; अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2021)।

3. अध्ययन क्षेत्र का परिचय

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य का अजमेर जिला है। यह अध्ययन विशेष रूप से अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तनों पर केंद्रित है। अजमेर राजस्थान का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं आर्थिक केंद्र है। जिले का शहरी एवं अर्ध-शहरी स्वरूप तथा विविध आर्थिक गतिविधियाँ महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं। घरेलू सेवाओं की बढ़ती आवश्यकता के कारण घरेलू कार्य महिलाओं के लिए रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गया है।

अजमेर जिले में घरेलू महिला श्रमिक विभिन्न परिवारों के घरों में साफ-सफाई, भोजन बनाना, कपड़े धोना तथा बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल जैसे कार्यों में संलग्न रहती हैं। उनकी सामाजिक स्थिति को समझने के लिए निवास, पारिवारिक संरचना, शिक्षा, आवास तथा आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन आवश्यक है। इस शोध में ग्रामीण एवं शहरी निवास, मकान का प्रकार, पारिवारिक आय, बैंक खाते, मोबाइल फोन तथा बच्चों की शिक्षा जैसे संकेतकों को सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के रूप में सम्मिलित किया गया है।

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत घरेलू महिला श्रमिकों को आय की सीमितता, कार्य की अनिश्चितता, अधिक कार्यभार तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य परिस्थितियों एवं श्रम सुरक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण केवल रोजगार और आय तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, जीवन स्तर, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता तथा निर्णय लेने की क्षमता में आए परिवर्तनों का भी अध्ययन किया गया है (कबीर 1999)। इस प्रकार अजमेर जिला घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

4. शोध पद्धति एवं नमूना चयन

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन की प्रकृति सामाजिक विज्ञान से संबंधित होने के कारण इसमें महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं कार्य संबंधी अनुभवों को समझने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्यतः वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से घरेलू महिला श्रमिकों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक एवं कार्य संबंधी परिस्थितियों का अध्ययन किया गया, जबकि तुलनात्मक दृष्टिकोण से रोजगार के परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति, सम्मान, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता तथा पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया। शोध पद्धति सामाजिक वास्तविकताओं के व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन का आधार प्रदान करती है। सामाजिक अनुसंधान में किसी समूह की स्थिति, अनुभव तथा व्यवहार को समझने के लिए प्राथमिक तथ्यों का विशेष महत्त्व होता है (कोठारी, 2004)। इसी आधार पर प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु संरचित साक्षात्कार अनुसूची/प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए तैयार प्रश्नावली में कुल 65 प्रश्न सम्मिलित हैं। इनके माध्यम से उत्तरदाताओं की सामान्य सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, कार्य संबंधी स्थिति, सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया तथा समस्याओं एवं चुनौतियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है।

प्रश्नावली को पाँच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है- सामान्य परिचय, कार्य संबंधी जानकारी, सामाजिक स्थिति एवं परिवर्तन, परिवार एवं निर्णय प्रक्रिया तथा समस्याएँ एवं चुनौतियाँ। सामान्य परिचय के अंतर्गत आयु, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा स्तर, परिवार का प्रकार, पारिवारिक आय, बैंक खाते तथा बच्चों की शिक्षा जैसी सामाजिक-आर्थिक सूचनाओं को शामिल किया गया है। कार्य संबंधी जानकारी के अंतर्गत घरेलू कार्य की अवधि, प्रतिदिन कार्य के घंटे, कार्य करने वाले घरों की संख्या, कार्य की प्रकृति, मासिक आय, वेतन की नियमितता तथा कार्य परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र राजस्थान का अजमेर जिला है तथा अध्ययन की इकाई असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाएँ हैं। नमूना चयन के अंतर्गत कुल 100 घरेलू महिला श्रमिकों को उत्तरदाता के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह नमूना अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं कार्य संबंधी स्थितियों को समझने के लिए चयनित किया गया है। अध्ययन में विशेष रूप से उन महिलाओं को आधार बनाया गया है जो प्रत्यक्ष रूप से घरेलू कार्य से जुड़ी हुई हैं।

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तथ्यों के विश्लेषण हेतु प्राप्त आँकड़ों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध किया गया है। विश्लेषण के लिए मुख्यतः आवृत्ति एवं प्रतिशत पद्धति का उपयोग किया गया है। चूँकि कुल नमूना आकार 100 है, इसलिए उत्तरदाताओं की संख्या एवं प्रतिशत के आधार पर विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का तुलनात्मक विश्लेषण सरल एवं स्पष्ट रूप से किया जा सकता है। आवश्यकतानुसार आँकड़ों को तालिकाओं एवं चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से भी प्रदर्शित किया गया है। अध्ययन में सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के प्रमुख संकेतकों के रूप में सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, जीवन स्तर, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सम्मिलित किया गया है। साथ ही पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी तथा आर्थिक योगदान के कारण उनकी सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का भी विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार अपनाई गई शोध पद्धति घरेलू महिला श्रमिकों की वर्तमान परिस्थितियों एवं रोजगार के पश्चात उनकी सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों के व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करती है।

5. उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

किसी भी सामाजिक अध्ययन में उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके परिवार, शिक्षा, आय, वैवाहिक स्थिति, आवासीय परिस्थितियों तथा उपलब्ध संसाधनों से प्रभावित होती है। शोध पत्र में अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत 100 महिलाओं को अध्ययन की इकाई के रूप में शामिल किया गया है। इन महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण उनकी आयु, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा स्तर, परिवार के प्रकार, परिवार के सदस्यों की संख्या, कमाने वाले सदस्यों की संख्या, निवास की स्थिति, पारिवारिक आय तथा अन्य सामाजिक सुविधाओं के आधार पर किया जाएगा।

5.1 आयु एवं वैवाहिक स्थिति

उत्तरदाताओं की आयु उनके सामाजिक एवं पारिवारिक अनुभवों को प्रभावित करने वाला महत्त्वपूर्ण कारक है। विभिन्न आयु वर्गों की महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, कार्य क्षमता तथा सामाजिक अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं। इसी प्रकार वैवाहिक स्थिति भी महिला की आर्थिक एवं सामाजिक भूमिका को प्रभावित करती है। अध्ययन में उत्तरदाताओं को विवाहित, अविवाहित, परित्यक्ता तथा तलाकशुदा जैसी वैवाहिक श्रेणियों के आधार पर समझने का प्रयास किया जाएगा। प्रश्नावली में आयु एवं वैवाहिक स्थिति को उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी के प्रमुख आधार के रूप में शामिल किया गया है।

तालिका:1 उत्तरदाताओं की आयु एवं शैक्षिक स्थिति

आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
18–25 वर्ष	18	18
26–35 वर्ष	36	36
36–45 वर्ष	28	28
46 वर्ष एवं अधिक	18	18
कुल	100	100

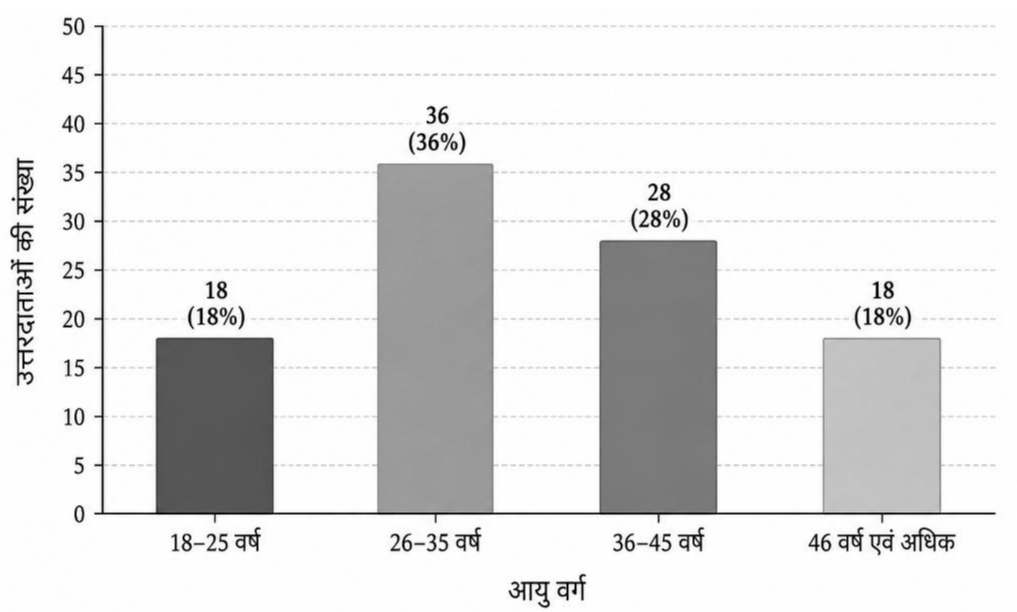

चित्र 1: आयु वर्ग के अनुसार घरेलू महिला श्रमिक उत्तरदाताओं का वितरण

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 26–35 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या सर्वाधिक (36%) है, जबकि 36–45 वर्ष आयु वर्ग की 28% महिलाएँ हैं। 18–25 वर्ष तथा 46 वर्ष एवं अधिक आयु वर्ग में समान रूप से 18% उत्तरदाता शामिल हैं। इससे संकेत मिलता है कि अध्ययन में घरेलू श्रमिक महिलाओं का प्रमुख हिस्सा सक्रिय कार्यशील आयु वर्ग से संबंधित है।

5.2 शिक्षा स्तर

शिक्षा महिलाओं की सामाजिक जागरूकता, आत्मविश्वास तथा रोजगार के अवसरों को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक है। शोध पत्र में उत्तरदाताओं के शिक्षा स्तर को प्राथमिक, माध्यमिक तथा निरक्षर श्रेणियों के आधार पर दर्ज किया जाएगा। घरेलू महिला श्रमिकों की शिक्षा का स्तर उनकी आर्थिक प्रगति, सामाजिक पहचान और बेहतर रोजगार प्राप्त करने की संभावनाओं को प्रभावित कर सकता है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा एवं संसाधनों तक पहुँच को महत्त्वपूर्ण माना गया है (कबीर 1999)। प्रश्नावली में शिक्षा स्तर को सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रमुख संकेतक के रूप में सम्मिलित किया गया है।

तालिका:2 उत्तरदाताओं की शिक्षा स्तर

शैक्षिक स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
प्राथमिक	35	35
माध्यमिक	43	43
निरक्षर	22	22
कुल	100	100

तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल 100 घरेलू महिला श्रमिकों में सर्वाधिक 43 प्रतिशत महिलाएँ माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं। इसके बाद 35 प्रतिशत महिलाएँ प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त हैं, जबकि 22 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर हैं। इस प्रकार प्रश्नावली में निर्धारित तीनों शैक्षिक श्रेणियों के अनुरूप आँकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। प्रश्नावली में उच्च माध्यमिक एवं उससे अधिक शिक्षा की अलग श्रेणी नहीं है, इसलिए उसे तालिका में शामिल नहीं किया गया है।

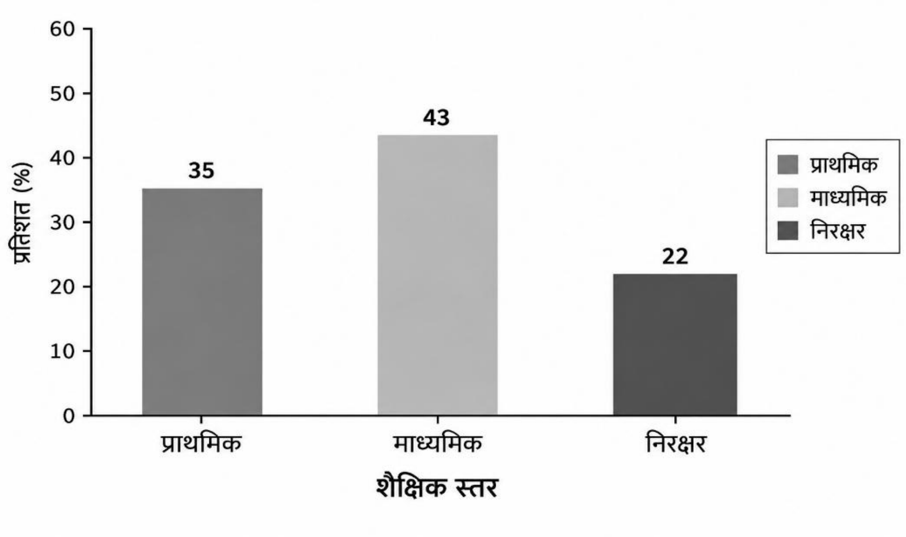

चित्र 2: उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर

चित्र में अजमेर जिले की 100 घरेलू महिला श्रमिक उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर का प्रतिशतवार वितरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें 35% उत्तरदाता प्राथमिक, 43% माध्यमिक तथा 22% निरक्षर हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में माध्यमिक स्तर तक शिक्षित महिलाओं का अनुपात सर्वाधिक है, जबकि निरक्षर महिलाओं का अनुपात अपेक्षाकृत कम है। यह वर्गीकरण प्रश्नावली में निर्धारित शैक्षिक श्रेणियों के अनुरूप है।

5.3 परिवार की संरचना एवं आकार

परिवार की संरचना महिला के जीवन एवं कार्य संबंधी जिम्मेदारियों को प्रभावित करती है। संयुक्त और एकल परिवारों में घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल तथा आर्थिक जिम्मेदारियों की प्रकृति अलग-अलग हो सकती है। अध्ययन में परिवार के प्रकार के साथ-साथ कुल सदस्यों तथा परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या का भी अध्ययन किया जाएगा। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि घरेलू महिला

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

श्रमिकों पर आर्थिक एवं पारिवारिक दायित्वों का स्वरूप किस प्रकार प्रभाव डालता है।

5.4 निवास एवं आवासीय स्थिति

उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आकलन उनके निवास एवं आवास की प्रकृति से भी किया जा सकता है। शोध पत्र में ग्रामीण एवं शहरी निवास, कच्चे एवं पक्के मकान तथा स्वयं के एवं किराये के मकान की स्थिति को शामिल किया गया है। आवास की प्रकृति परिवार की आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक हो सकती है।

5.5 पारिवारिक मासिक आय

परिवार की मासिक आय सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रमुख आधार है। प्रश्नावली में पारिवारिक आय को ₹10,000 से कम, ₹10,000 से ₹19,999 तथा ₹20,000 से अधिक की श्रेणियों में विभाजित किया गया है। घरेलू महिला श्रमिकों की व्यक्तिगत आय के साथ-साथ परिवार की कुल आर्थिक स्थिति का अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि महिलाओं का रोजगार पारिवारिक आर्थिक संसाधनों में किस सीमा तक योगदान करता है। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच को महिलाओं की निर्णय क्षमता और सशक्तिकरण से संबंधित महत्त्वपूर्ण कारक माना गया है (कबीर 1999)।

5.6 बैंक खाता एवं वित्तीय समावेशन

वर्तमान सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में बैंक खाते की उपलब्धता वित्तीय समावेशन का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है। बैंक खाता महिलाओं को अपनी आय के सुरक्षित प्रबंधन तथा औपचारिक वित्तीय सेवाओं से जुड़ने का अवसर प्रदान कर सकता है। शोध पत्र में यह जानकारी प्राप्त की जाएगी कि उत्तरदाता का बैंक खाता है अथवा नहीं। इससे महिलाओं की वित्तीय सुविधाओं तक पहुँच की स्थिति को समझने में सहायता मिलेगी।

5.7 मोबाइल फोन की उपलब्धता

मोबाइल फोन आधुनिक सामाजिक जीवन में संचार एवं सूचना प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। घरेलू महिला श्रमिकों के पास मोबाइल फोन की उपलब्धता उनके सामाजिक संपर्क, सूचना तक पहुँच तथा पारिवारिक एवं कार्य संबंधी समन्वय को प्रभावित कर सकती है। प्रश्नावली में मोबाइल फोन की उपलब्धता को सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के एक संकेतक के रूप में सम्मिलित किया गया है।

5.8 बच्चों की शिक्षा की स्थिति

महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने के लिए उनके बच्चों की शिक्षा भी एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है। प्रश्नावली में यह जानकारी शामिल की गई है कि परिवार में बच्चों की शिक्षा चल रही है अथवा नहीं। महिला का रोजगार परिवार की आय में योगदान देकर बच्चों की शिक्षा एवं भविष्य के प्रति परिवार की प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है।

6. घरेलू श्रमिक महिलाओं की कार्य एवं आर्थिक स्थिति

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत घरेलू श्रमिक महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए उनकी कार्य एवं आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। घरेलू कार्य महिलाओं के लिए आय अर्जित करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है, किंतु इस कार्य की प्रकृति प्रायः अनौपचारिक होती है। शोध पत्र में अजमेर जिले की घरेलू श्रमिक महिलाओं की कार्य अवधि, कार्य के घंटे, कार्य की प्रकृति, कार्य करने वाले घरों की संख्या, कार्य संतुष्टि, आवागमन, कार्य समय, अवकाश, मासिक आय, वेतन की नियमितता तथा कार्यस्थल की परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाएगा। घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं के कार्य की प्रकृति को प्रश्नावली में अध्ययन का एक प्रमुख आयाम बनाया गया है।

6.1 घरेलू कार्य की अवधि एवं कार्य समय

घरेलू कार्य में महिलाओं का अनुभव उनकी कार्य अवधि एवं दैनिक कार्य समय से प्रभावित होता है। अध्ययन में यह जानकारी प्राप्त की जाएगी कि उत्तरदाता कितने समय से घरेलू कार्य कर रही हैं तथा वे सुबह, शाम अथवा दोनों समय कार्य करती हैं। प्रतिदिन कार्य के घंटों का विश्लेषण महिलाओं के कार्यभार और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संबंध को समझने में सहायक होगा। घरेलू महिला श्रमिकों की कार्य परिस्थितियाँ इस बात पर भी निर्भर करती हैं कि वे कितने घरों में कार्य करती हैं। अधिक घरों में कार्य करने से कार्यभार, यात्रा और समय प्रबंधन की चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं। इसलिए कार्य करने वाले घरों की संख्या को महिलाओं की कार्य स्थिति का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक माना गया है।

6.2 कार्य की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि

घरेलू महिला श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति विविध होती है। प्रश्नावली के अनुसार इनके प्रमुख कार्यों में खाना बनाना, साफ-सफाई करना, बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल करना तथा बहुआयामी घरेलू कार्य शामिल हैं। कार्य की प्रकृति के साथ-साथ कार्य संतुष्टि का भी अध्ययन किया जाएगा। कार्य संतुष्टि को बहुत अधिक, थोड़ी बहुत तथा बिल्कुल नहीं जैसी श्रेणियों के आधार पर समझने का प्रयास किया जाएगा। इससे यह ज्ञात किया जा सकेगा कि महिलाएँ अपने कार्य को केवल आर्थिक आवश्यकता के रूप में देखती हैं अथवा उन्हें कार्य से संतुष्टि भी प्राप्त होती है।

6.3 कार्यस्थल तक आवागमन एवं समय प्रबंधन

घरेलू महिला श्रमिकों को कार्यस्थल तक पहुँचने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करना पड़ता है। प्रश्नावली में पैदल, स्वयं के वाहन तथा लोक परिवहन को आवागमन के प्रमुख माध्यमों के रूप में शामिल किया गया है। साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है कि आवागमन महिलाओं की आर्थिक स्थिति और समय प्रबंधन को किस प्रकार प्रभावित करता है। कार्यस्थल तक पहुँचने में लगने वाला समय महिलाओं की दैनिक दिनचर्या को प्रभावित कर सकता है। घरेलू कार्य एवं अपने परिवार की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए समय प्रबंधन एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

6.4 कार्य समय एवं साप्ताहिक अवकाश

असंगठित क्षेत्र में कार्य की निश्चितता एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि घरेलू महिला श्रमिकों का कार्य समय निश्चित है अथवा नहीं तथा उन्हें साप्ताहिक अवकाश प्राप्त होता है अथवा नहीं। निश्चित कार्य समय और पर्याप्त अवकाश कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। दूसरी ओर, अनिश्चित कार्य समय और अवकाश की अनुपलब्धता महिलाओं के कार्यभार को बढ़ा सकती है। घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य परिस्थितियों और श्रम सुरक्षा की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)।

6.5 मासिक आय एवं वेतन की स्थिति

महिलाओं की आर्थिक स्थिति का प्रमुख आधार उनकी आय है। प्रश्नावली में मासिक आय को ₹6,000 से कम, ₹6,000 से ₹9,999 तथा ₹10,000 से अधिक की श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इसके साथ ही समय पर वेतन मिलना, वेतन से पारिवारिक खर्च की पूर्ति होना तथा कभी वेतन काटा जाना जैसे पहलुओं को भी शामिल किया गया है। महिला की व्यक्तिगत आय केवल उसकी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन नहीं है, बल्कि यह परिवार में उसके आर्थिक योगदान को भी दर्शाती है। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच महिलाओं के विकल्पों और निर्णय लेने की क्षमता से जुड़ी हो सकती है (कबीर 1999)। इसलिए घरेलू महिला श्रमिकों की आय का विश्लेषण उनकी व्यापक सामाजिक स्थिति को समझने में भी उपयोगी है।

तालिका:3 घरेलू महिला श्रमिकों की कार्य एवं मासिक आय की स्थिति

कार्य एवं आर्थिक संकेतक	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत (%)
प्रतिदिन कार्य समय	4 घंटे से कम	21	21
	4–8 घंटे	56	56
	8 घंटे से अधिक	23	23
मासिक आय	₹6,000 से कम	29	29
	₹6,000–₹9,999	48	48
	₹10,000 एवं अधिक	23	23
वेतन की नियमितता	नियमित	62	62
	कभी-कभी विलंब	28	28
	अनियमित	10	10

तालिका से घरेलू महिला श्रमिकों की कार्य अवधि एवं आर्थिक स्थिति का आकलन किया जा सकता है। अधिकांश उत्तरदाता प्रतिदिन 4 से घंटे तक कार्य करती हैं तथा बड़ी संख्या मध्यम आय वर्ग में आती है। हालांकि वेतन की नियमितता में कुछ महिलाओं को विलंब या अनियमित भुगतान जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

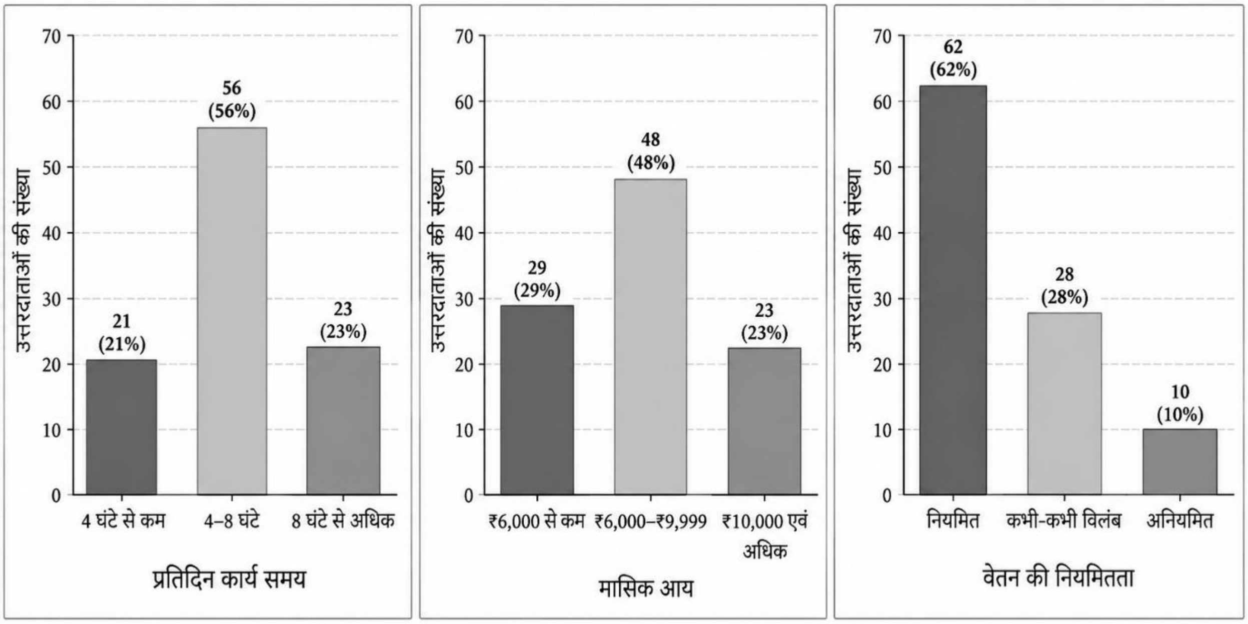

चित्र 3: घरेलू महिला श्रमिकों की कार्य एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(क) प्रतिदिन कार्य समय: चित्र से स्पष्ट होता है कि 56% महिलाएँ प्रतिदिन 4–8 घंटे कार्य करती हैं। जबकि 23% महिलाएँ 8 घंटे से अधिक तथा 21% महिलाएँ 4 घंटे से कम कार्य करती हैं। इससे पता चलता है कि अधिकांश घरेलू महिला श्रमिक मध्यम अवधि तक प्रतिदिन कार्य करती हैं।

(ख) मासिक आय: आँकड़ों के अनुसार 48% महिलाओं की मासिक आय ₹6,000–₹9,999 के बीच है। 29% महिलाओं की आय ₹6,000 से कम है, जबकि 23% महिलाएँ ₹10,000 एवं अधिक आय अर्जित करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता निम्न से मध्यम आय वर्ग में आती हैं।

(ग) वेतन की नियमितता: वेतन की स्थिति में 62% महिलाओं को नियमित रूप से वेतन प्राप्त होता है। वहीं 28% महिलाओं को कभी-कभी वेतन में विलंब का सामना करना पड़ता है तथा 10% महिलाओं का वेतन अनियमित है। यह दर्शाता है कि अधिकांश महिलाओं को नियमित भुगतान मिलता है, फिर भी कुछ घरेलू महिला श्रमिकों के समक्ष वेतन की अनिश्चितता एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

6.6 अतिरिक्त आर्थिक लाभ

घरेलू महिला श्रमिकों को नियमित वेतन के अतिरिक्त त्योहारों अथवा विशेष अवसरों पर पुरस्कार या भेंट प्राप्त होती है अथवा नहीं, इसका भी अध्ययन किया गया है। इस प्रकार के अतिरिक्त लाभ महिलाओं की कार्य परिस्थितियों एवं नियोक्ताओं के साथ उनके संबंधों को समझने में सहायक हो सकते हैं।

6.7 कार्यस्थल का वातावरण एवं सुरक्षा

कार्यस्थल का वातावरण घरेलू महिला श्रमिकों के अनुभवों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। प्रस्तुत प्रश्नावली में कार्यस्थल पर सुरक्षा की अनुभूति, मालिक के व्यवहार तथा बीमारी की स्थिति में अवकाश मिलने से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए हैं। कार्यस्थल पर सुरक्षा और सम्मानजनक व्यवहार महिलाओं की कार्य संतुष्टि तथा सामाजिक गरिमा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। यदि कार्यस्थल पर सहयोगपूर्ण वातावरण उपलब्ध होता है, तो महिलाओं के कार्य अनुभव अधिक सकारात्मक हो सकते हैं। इसके विपरीत असुरक्षा या बीमारी के समय अवकाश का अभाव उनकी कार्य एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों को प्रभावित कर सकता है।

7. महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण

महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसका संबंध केवल आर्थिक आय से नहीं, बल्कि परिवार एवं समाज में प्राप्त सम्मान, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन स्तर से भी होता है। घरेलू श्रमिक के रूप में कार्य करने से महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में संसाधनों तक पहुँच, विकल्पों की उपलब्धता और निर्णय लेने की क्षमता को महत्त्वपूर्ण माना गया है (कबीर 1999)। शोध पत्र में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण मुख्यतः उनकी रोजगार संबंधी स्थिति और रोजगार के पश्चात अनुभव किए गए सामाजिक परिवर्तनों के आधार पर किया जाएगा। प्रश्नावली में विशेष रूप से यह जानने का प्रयास किया गया है कि घरेलू कार्य करने के बाद महिलाओं के प्रति समाज एवं परिवार के दृष्टिकोण, उनके जीवन स्तर, आत्मविश्वास तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता में किस प्रकार का परिवर्तन आया है।

7.1 सामाजिक सम्मान एवं पारिवारिक दृष्टिकोण में परिवर्तन

महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक प्रमुख संकेतक परिवार एवं समाज में उन्हें प्राप्त सम्मान है। जब महिलाएँ आय अर्जित कर परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं में योगदान देती हैं, तो उनके प्रति परिवार के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने की संभावना उत्पन्न हो सकती है। शोध पत्र में रोजगार के बाद समाज में सम्मान बढ़ने तथा परिवार के दृष्टिकोण में परिवर्तन से संबंधित उत्तरों का विश्लेषण किया जाएगा। इस तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि रोजगार के परिणामस्वरूप महिलाओं की सामाजिक पहचान और पारिवारिक भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन आया है अथवा नहीं। सामाजिक सम्मान में परिवर्तन को महिला की आय, पारिवारिक योगदान और सामाजिक सहभागिता के संदर्भ में देखा जाएगा।

7.2 जीवन स्तर में परिवर्तन

रोजगार के माध्यम से प्राप्त आय महिलाओं और उनके परिवारों के जीवन स्तर को प्रभावित कर सकती है। प्रश्नावली में यह जानकारी शामिल की गई है कि घरेलू कार्य करने के बाद महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है अथवा नहीं। जीवन स्तर में परिवर्तन का संबंध केवल आय से नहीं, बल्कि दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति, परिवार की आर्थिक स्थिरता तथा उपलब्ध सामाजिक सुविधाओं से भी हो सकता है। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह देखा जाएगा कि रोजगार से पूर्व की स्थिति की तुलना में वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन अनुभव किया गया है।

7.3 सामाजिक सहभागिता में परिवर्तन

महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए सामाजिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी भी महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यक्रमों, पारिवारिक आयोजनों तथा सामुदायिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता उनकी सामाजिक पहचान और सामाजिक संपर्कों को प्रभावित कर सकती है। प्रस्तुत प्रश्नावली में घरेलू कार्य करने के बाद सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ने से संबंधित प्रश्न शामिल किया गया है। इस आधार पर यह विश्लेषण किया जाएगा कि रोजगार के बाद महिलाओं की सामाजिक सक्रियता में वृद्धि हुई है, कमी आई है अथवा कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।

7.4 आत्मविश्वास एवं निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन

आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता महिलाओं के आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकती है। अपनी आय अर्जित करने वाली महिला व्यक्तिगत एवं पारिवारिक परिस्थितियों को लेकर अधिक आत्मविश्वास का अनुभव कर सकती है। प्रश्नावली में घरेलू कार्य करने के बाद आत्मविश्वास में वृद्धि तथा स्वयं निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन से

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संबंधित प्रश्न शामिल हैं। महिला सशक्तिकरण के अध्ययन में निर्णय लेने की क्षमता को महत्त्वपूर्ण संकेतक माना गया है, क्योंकि यह महिला की स्वतंत्र भूमिका और पारिवारिक स्थिति को प्रदर्शित करती है (कबीर 1999)। अतः उत्तरदाताओं के उत्तरों के आधार पर रोजगार के पूर्व एवं वर्तमान सामाजिक अनुभवों की तुलनात्मक व्याख्या की जाएगी।

7.5 व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक पहचान

महिलाओं की व्यक्तिगत स्वतंत्रता उनके सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। रोजगार से महिलाओं को आर्थिक योगदान करने और घर के बाहर सामाजिक संपर्क स्थापित करने का अवसर मिलता है। प्रश्नावली में यह जानने का प्रयास किया गया है कि महिलाओं को पहले की तुलना में अब अधिक स्वतंत्रता महसूस होती है अथवा नहीं तथा क्या उनके सामाजिक पहचान के स्तर में परिवर्तन हुआ है। इस विश्लेषण से यह समझने में सहायता मिलेगी कि घरेलू श्रमिक के रूप में कार्य करने से महिलाओं की आत्म-छवि तथा समाज में उनकी पहचान किस सीमा तक प्रभावित हुई है।

7.6 जीवनशैली में परिवर्तन

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का प्रभाव उनकी जीवनशैली पर भी दिखाई दे सकता है। प्रश्नावली में रोजगार के पश्चात पहनावे, खान-पान तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में हुए परिवर्तनों को सम्मिलित किया गया है। इन पहलुओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात किया जाएगा कि आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता ने महिलाओं की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और दैनिक जीवन से संबंधित व्यवहारों को किस सीमा तक प्रभावित किया है।

7.7 बच्चों की शिक्षा एवं भविष्य के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन

महिला का रोजगार केवल उसके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार विशेषकर बच्चों के जीवन को भी प्रभावित कर सकता है। प्रश्नावली में रोजगार के बाद बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देने तथा उनके भविष्य के प्रति सोच में परिवर्तन से संबंधित प्रश्न शामिल हैं। इस आधार पर यह विश्लेषण किया जाएगा कि घरेलू श्रमिक महिलाओं की आर्थिक सहभागिता ने बच्चों की शिक्षा एवं भविष्य संबंधी प्राथमिकताओं को किस सीमा तक प्रभावित किया है।

7.8 अधिकारों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता

सामाजिक परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम महिलाओं की जागरूकता भी है। महिला अधिकारों की जानकारी तथा सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता महिलाओं को उपलब्ध संसाधनों और अवसरों से जोड़ सकती है। प्रश्नावली में महिला अधिकारों की जानकारी तथा सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए हैं। जागरूकता का स्तर महिलाओं की सामाजिक भागीदारी एवं निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक हो सकता है। इसलिए प्राप्त उत्तरों के आधार पर महिलाओं की रोजगार स्थिति और जागरूकता के स्तर के मध्य संबंध का अध्ययन किया जाएगा। इस प्रकार महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन आर्थिक योगदान के साथ-साथ सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दृष्टिकोण, जीवन स्तर, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता तथा जागरूकता जैसे बहुआयामी संकेतकों पर आधारित होगा।

तालिका:4 रोजगार के बाद महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन का संकेतक	सकारात्मक परिवर्तन	परिवर्तन नहीं	नकारात्मक/कमी	कुल
सामाजिक सम्मान में वृद्धि	64	26	10	100
पारिवारिक दृष्टिकोण में सुधार	68	23	9	100
जीवन स्तर में सुधार	61	30	9	100
आत्मविश्वास में वृद्धि	72	21	7	100
निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि	59	31	10	100
व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि	57	32	11	100

तालिका से रोजगार के पश्चात महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। आत्मविश्वास, पारिवारिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक सम्मान में अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। निर्णय लेने की क्षमता एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता में परिवर्तन अपेक्षाकृत धीरे-धीरे विकसित होने वाले सामाजिक आयाम हो सकते हैं।

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

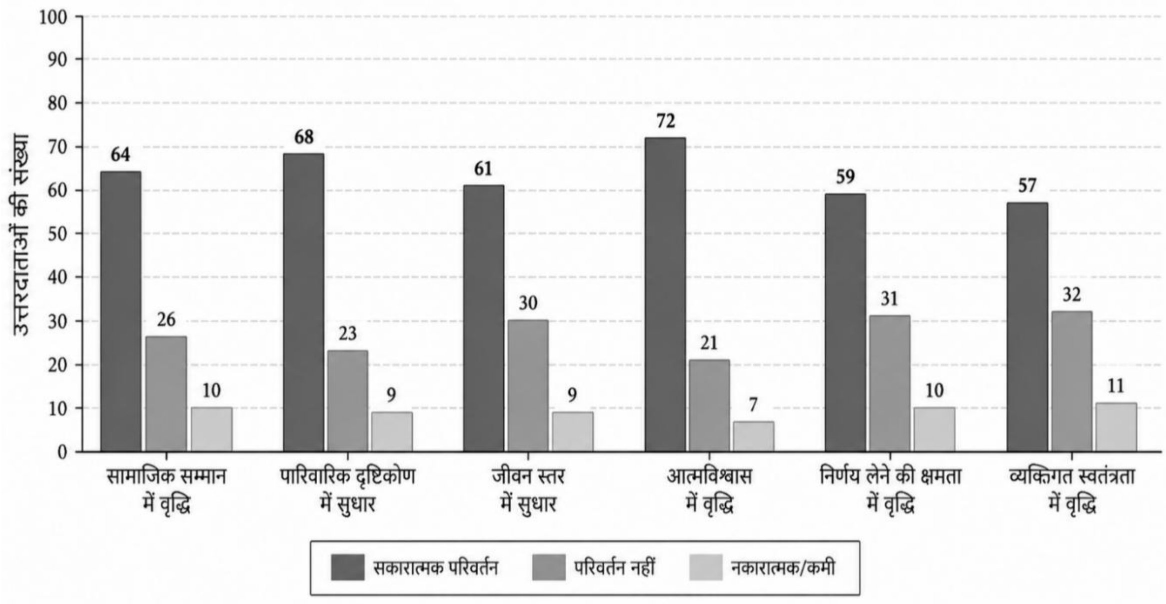

चित्र 4: घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण

चित्र से स्पष्ट होता है कि घरेलू कार्य में रोजगार के बाद महिलाओं की सामाजिक स्थिति के विभिन्न आयामों में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। सबसे अधिक 72% महिलाओं में आत्मविश्वास की वृद्धि दर्ज की गई, जबकि 68% में पारिवारिक दृष्टिकोण में सुधार और 64% में सामाजिक सम्मान में वृद्धि देखी गई। जीवन स्तर, निर्णय क्षमता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया। हालांकि कुछ महिलाओं ने परिवर्तन नहीं होने अथवा कमी का अनुभव भी व्यक्त किया।

8. परिवार, निर्णय प्रक्रिया एवं महिला सशक्तिकरण

परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया महिला की सामाजिक स्थिति एवं सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है। पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय प्रायः पुरुष सदस्यों द्वारा लिए जाते रहे हैं तथा महिलाओं की भूमिका घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल तक सीमित मानी जाती थी। किंतु आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता की संभावनाओं को बढ़ाया है। प्रस्तुत अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि परिवार के महत्त्वपूर्ण निर्णय पति, पत्नी, दोनों अथवा अन्य परिवार के सदस्यों द्वारा लिए जाते हैं तथा घरेलू निर्णयों में महिलाओं की राय को कितना महत्त्व दिया जाता है। इस प्रकार महिला की रोजगार स्थिति एवं निर्णय प्रक्रिया में उसकी भागीदारी के बीच संबंध को समझने का प्रयास किया गया है। बच्चों की शिक्षा संबंधी निर्णयों में महिला की भूमिका भी उसकी पारिवारिक स्थिति का महत्त्वपूर्ण संकेतक है। घरेलू महिला श्रमिकों की आय परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में योगदान देती है और इससे बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में उनकी सहभागिता प्रभावित हो सकती है। अध्ययन में यह देखा गया है कि बच्चों की शिक्षा, उनकी आवश्यकताओं तथा भविष्य से जुड़े निर्णयों में महिलाओं की भूमिका किस सीमा तक है। आर्थिक योगदान के साथ शिक्षा संबंधी निर्णयों में भागीदारी महिला की सामाजिक भूमिका और पारिवारिक स्वीकार्यता को मजबूत कर सकती है।

घरेलू खर्च एवं आर्थिक निर्णयों में सहभागिता भी महिला सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। जब महिला स्वयं आय अर्जित करती है और परिवार की आर्थिक व्यवस्था में योगदान देती है, तो घरेलू खर्च, बचत तथा अन्य आवश्यकताओं से संबंधित निर्णयों में उसकी भूमिका बढ़ने की संभावना होती है। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच तथा उनके उपयोग से संबंधित निर्णय लेने की क्षमता को महिला सशक्तिकरण का प्रमुख आधार माना गया है (कबीर 1999)। अध्ययन में महिलाओं की अपनी आय के उपयोग तथा घरेलू आर्थिक निर्णयों में भागीदारी का विश्लेषण किया गया है। महिला की कार्यक्षमता और सामाजिक स्थिति पर परिवार का सहयोग भी प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। यदि परिवार महिला के रोजगार को स्वीकार करता है और उसके कार्य में सहयोग प्रदान करता है, तो कार्य एवं पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करना अपेक्षाकृत सरल हो सकता है। पति एवं बच्चों का सहयोग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि घरेलू महिला श्रमिकों को रोजगार के साथ अपने घर के कार्यों एवं बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है। पारिवारिक सहयोग कार्यभार को कम करने के साथ-साथ महिलाओं के आत्मविश्वास एवं स्वतंत्रता की भावना को भी प्रभावित कर सकता है।

परिवार और कार्य के बीच संतुलन बनाए रखना घरेलू महिला श्रमिकों के सामने एक प्रमुख चुनौती है। कार्य के घंटे, अधिक कार्यभार तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं को समय और श्रम संबंधी दबाव का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए यह अध्ययन कार्यभार, पारिवारिक सहयोग तथा रोजगार की परिस्थितियों के बीच संबंध को भी समझता है। महिला द्वारा परिवार की आय में किया गया आर्थिक योगदान उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में परिवर्तन ला सकता है। हालांकि आर्थिक योगदान मात्र से पूर्ण सशक्तिकरण सुनिश्चित नहीं होता। वास्तविक सशक्तिकरण के लिए सम्मान, निर्णय

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लेने की क्षमता, स्वतंत्रता तथा सामाजिक स्वीकार्यता भी आवश्यक हैं (बाटलीवाला, 1994; कबीर 1999)। अतः प्रस्तुत अध्ययन में महिला सशक्तिकरण को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझा गया है, जिसमें आर्थिक भागीदारी, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता, बच्चों की शिक्षा, घरेलू खर्च में भूमिका, परिवार का सहयोग तथा सामाजिक सम्मान को प्रमुख आधार बनाया गया है। इस प्रकार रोजगार के साथ निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक स्वीकार्यता में सकारात्मक परिवर्तन को महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

9. घरेलू महिला श्रमिकों की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत घरेलू महिला श्रमिकों का जीवन अनेक सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं कार्य संबंधी चुनौतियों से प्रभावित होता है। घरेलू कार्य महिलाओं के लिए आय अर्जित करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है, किंतु इस क्षेत्र की अनौपचारिक प्रकृति के कारण रोजगार की स्थिरता, उचित पारिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा तथा कार्य संबंधी सुविधाएँ सीमित हो सकती हैं। घरेलू महिला श्रमिकों को अपने रोजगार के साथ-साथ परिवार और घरेलू जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है, जिसके कारण उनके जीवन में कार्यभार एवं जिम्मेदारियों का दोहरा दबाव उत्पन्न हो सकता है। घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य परिस्थितियों तथा श्रम सुरक्षा की आवश्यकता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्त्व दिया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। प्रस्तुत अध्ययन की प्रश्नावली में घरेलू महिला श्रमिकों की प्रमुख समस्याओं को व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया गया है, जिनमें कम वेतन, अधिक कार्यभार, समय की कमी, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, आवागमन की कठिनाइयाँ, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, भविष्य की चिंता तथा कार्यस्थल पर शोषण जैसी चुनौतियाँ प्रमुख हैं।

घरेलू महिला श्रमिकों के सामने कम वेतन एवं आर्थिक असुरक्षा एक महत्त्वपूर्ण समस्या हो सकती है। सीमित आय के कारण अपनी तथा परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो सकता है। यद्यपि महिलाओं का आर्थिक योगदान परिवार के लिए महत्त्वपूर्ण होता है, फिर भी अपर्याप्त आय उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच महिलाओं के विकल्पों एवं निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है (कबीर 1999)। इसी प्रकार अधिक कार्यभार और समय की कमी महिलाओं के दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। कई महिलाओं को एक से अधिक घरों में कार्य करने के साथ-साथ अपने परिवार की घरेलू जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है। इसका प्रभाव बच्चों की देखभाल, पारिवारिक जीवन तथा व्यक्तिगत विश्राम पर पड़ सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी घरेलू महिला श्रमिकों के जीवन की एक प्रमुख चुनौती हैं। लगातार शारीरिक श्रम, लंबे समय तक कार्य तथा पर्याप्त विश्राम के अभाव से थकान एवं अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्यस्थलों तक पहुँचने के लिए प्रतिदिन आवागमन करना पड़ सकता है। कार्यस्थल की दूरी अथवा सीमित परिवहन सुविधाओं के कारण महिलाओं के समय और आर्थिक संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। इस प्रकार आवागमन की कठिनाइयाँ कार्य समय तथा परिवार और रोजगार के बीच संतुलन को भी प्रभावित कर सकती हैं।

असंगठित क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता सामाजिक सुरक्षा का सीमित होना है। बीमारी, दुर्घटना अथवा कार्य छूटने की स्थिति में महिलाओं की आय प्रभावित हो सकती है, जिससे भविष्य की आर्थिक सुरक्षा को लेकर चिंता उत्पन्न होती है। घरेलू महिला श्रमिकों के लिए रोजगार की निरंतरता और आर्थिक स्थिरता का प्रश्न विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। पारिवारिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा तथा बढ़ते खर्चों के कारण भविष्य संबंधी चिंताएँ अधिक गंभीर हो सकती हैं। घरेलू श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा एवं सम्मानजनक कार्य परिस्थितियों की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। कार्यस्थल पर शोषण अथवा असम्मानजनक व्यवहार भी एक संभावित चुनौती है। घरेलू महिला श्रमिकों के कार्यस्थल प्रायः निजी घर होते हैं, जहाँ औपचारिक कार्य व्यवस्था सीमित हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में कार्य संबंधी विवाद, आर्थिक असमानता अथवा मानसिक दबाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। महिलाओं के सामने बच्चों की देखभाल और रोजगार के बीच संतुलन बनाए रखना भी कठिन हो सकता है। उन्हें कार्यस्थल की जिम्मेदारियों के साथ अपने घर, बच्चों और परिवार की आवश्यकताओं को भी पूरा करना पड़ता है।

कार्यस्थल परिवर्तन अथवा नया कार्य प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयाँ भी रोजगार की अनिश्चितता को बढ़ा सकती हैं। घरेलू कार्य अक्सर व्यक्तिगत संपर्कों और स्थानीय नेटवर्क पर आधारित होता है। यदि किसी महिला को कार्य छोड़ना पड़े, तो नया रोजगार प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके अतिरिक्त समाज में घरेलू श्रमिकों को मिलने वाला सम्मान तथा बेहतर रोजगार की आकांक्षा भी महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न हैं। शिक्षा एवं कौशल की सीमितता महिलाओं के रोजगार विकल्पों को प्रभावित कर सकती है। बेहतर रोजगार की इच्छा यह दर्शाती है कि वर्तमान कार्य परिस्थितियाँ और आय सभी महिलाओं की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाती हैं।

तालिका:5 घरेलू महिला श्रमिकों की प्रमुख समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

प्रमुख समस्या/चुनौती	समस्या का अनुभव करने वाली महिलाएँ	प्रतिशत (%)
कम वेतन	58	58
अधिक कार्यभार	54	54
समय की कमी	49	49
स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ	42	42
सामाजिक सुरक्षा का अभाव	67	67
भविष्य की आर्थिक चिंता	63	63
कार्यस्थल तक पहुँच की कठिनाई	31	31
कार्यस्थल पर असम्मानजनक व्यवहार	27	27

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बच्चों की देखभाल में कठिनाई	45	45

तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है कि घरेलू महिला श्रमिकों के समक्ष सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा भविष्य की आर्थिक चिंता प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरती हैं। इसके अतिरिक्त कम वेतन, अधिक कार्यभार तथा पारिवारिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती हैं।

10. निष्कर्ष एवं सुझाव

10.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं कार्य संबंधी परिस्थितियों का समग्र अध्ययन करना है। अध्ययन में 100 घरेलू महिला श्रमिकों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रश्नावली के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, कार्य एवं आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति में परिवर्तन, पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया तथा समस्याओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू श्रमिक के रूप में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव उनके सामाजिक सम्मान, पारिवारिक भूमिका, आत्मविश्वास तथा निर्णय लेने की क्षमता पर भी पड़ सकता है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन को सामाजिक सम्मान, परिवार के दृष्टिकोण, जीवन स्तर, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक पहचान जैसे संकेतकों के माध्यम से समझा गया है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में आर्थिक भागीदारी महत्त्वपूर्ण है, किंतु केवल आय अर्जित करना पूर्ण सशक्तिकरण का प्रमाण नहीं माना जा सकता। वास्तविक सशक्तिकरण का संबंध संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने की क्षमता तथा अपने जीवन से संबंधित विकल्पों के प्रयोग से भी है (कबीर 1999)।

इस दृष्टि से पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी विशेष महत्त्व रखती है। अध्ययन में परिवार के महत्त्वपूर्ण निर्णयों, घरेलू निर्णयों में महिलाओं की राय, बच्चों की शिक्षा तथा घरेलू खर्च में उनकी भूमिका को शामिल किया गया है। महिला का आर्थिक योगदान परिवार में उसकी स्थिति को प्रभावित कर सकता है, विशेषकर तब जब उसके विचारों एवं निर्णयों को स्वीकार्यता प्राप्त हो। इसी प्रकार कार्य की अवधि, प्रतिदिन कार्य के घंटे, कार्य करने वाले घरों की संख्या, कार्य की प्रकृति, मासिक आय, वेतन की नियमितता तथा साप्ताहिक अवकाश महिलाओं की कार्य एवं सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य परिस्थितियाँ एवं श्रम सुरक्षा आवश्यक मानी गई हैं (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2011)। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सामाजिक स्थिति में परिवर्तन को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों परिस्थितियों के संदर्भ में समझना आवश्यक है। रोजगार महिलाओं को आर्थिक योगदान, आत्मविश्वास एवं सामाजिक पहचान का अवसर प्रदान कर सकता है, वहीं कम वेतन, अधिक कार्यभार, समय की कमी, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा भविष्य की चिंता जैसी चुनौतियाँ भी उनके जीवन को प्रभावित कर सकती हैं।

10.2 सुझाव

घरेलू महिला श्रमिकों की स्थिति में सुधार के लिए उचित एवं नियमित वेतन की व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्हें स्वास्थ्य, बीमा, पेंशन तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ने के प्रभावी प्रयास आवश्यक हैं। महिलाओं को श्रम अधिकारों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए तथा कौशल विकास एवं शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। कार्य समय को व्यवस्थित कर पर्याप्त विश्राम एवं साप्ताहिक अवकाश सुनिश्चित किया जाना चाहिए। कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ सम्मानजनक एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार तथा शोषण की स्थिति में सहायता एवं शिकायत की व्यवस्था आवश्यक है। स्वास्थ्य जागरूकता, पारिवारिक सहयोग तथा बच्चों की शिक्षा को भी विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। साथ ही महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों एवं सामुदायिक संगठनों से जोड़कर उनकी सामूहिक सहभागिता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इस प्रकार आर्थिक अवसरों के साथ सामाजिक सम्मान, सुरक्षा एवं निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ करके घरेलू महिला श्रमिकों के वास्तविक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय। असंगठित श्रमिकों से संबंधित सामाजिक सुरक्षा एवं श्रम नीतियाँ। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2020.
2. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय। भारत में महिला सशक्तिकरण एवं लैंगिक समानता: वार्षिक रिपोर्ट। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2021.
3. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय। भारत में रोजगार और असंगठित क्षेत्र से संबंधित सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय; 2023.
4. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय। भारत में रोजगार एवं असंगठित क्षेत्र की स्थिति पर रिपोर्ट। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2019.
5. सेन अमर्त्य। विकास के रूप में स्वतंत्रता। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1999.
6. द्रेज़ जीन, सेन अमर्त्य। असमान भारत: विरोधाभास और संभावनाएँ। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2013.
7. भसीन कमला। महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता। नई दिल्ली: काली फॉर वीमेन; 2000.
8. मोज़र कैरोलिन ओएन। लैंगिक नियोजन और विकास: सिद्धांत, व्यवहार एवं प्रशिक्षण। लंदन: रूटलेज; 1993.
9. नारायण दीप, et al. सशक्तिकरण और गरीबी उन्मूलन: एक स्रोत पुस्तक। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक; 2002.
10. विश्व बैंक। विश्व विकास रिपोर्ट 2012: लैंगिक समानता और विकास। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक; 2012.

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

11. संयुक्त राष्ट्र महिला। महिला श्रम एवं आर्थिक सशक्तिकरण: वैश्विक परिप्रेक्ष्य। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र महिला; 2020.
12. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम। मानव विकास रिपोर्ट: असमानता एवं मानव विकास। न्यूयॉर्क: यूएनडीपी; 2020.
13. राष्ट्रीय महिला आयोग। भारत में महिलाओं के अधिकार एवं सशक्तिकरण संबंधी अध्ययन। नई दिल्ली: राष्ट्रीय महिला आयोग; 2021.
14. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019–21): भारत रिपोर्ट। मुंबई: अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान; 2021.
15. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। असंगठित अर्थव्यवस्था में महिलाएँ और रोजगार की चुनौतियाँ। जिनेवा: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन; 2018.
16. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। देखभाल कार्य और देखभाल संबंधी नौकरियाँ: बेहतर भविष्य के लिए कार्य। जिनेवा: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन; 2021.
17. चंद्र सुनीता। भारत में महिला श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति। नई दिल्ली: सामाजिक विज्ञान प्रकाशन; 2017.
18. शर्मा रेखा। असंगठित क्षेत्र में महिला श्रमिकों की कार्य परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ। भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका। 2019;12(2):45-58.
19. गुप्ता ममता। घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति और आर्थिक योगदान का अध्ययन। सामाजिक अनुसंधान पत्रिका। 2018;10(1):67-78.
20. कुमार सीमा। महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। भारतीय समाजशास्त्रीय अध्ययन। 2020;15(3):82-96.
21. सिंह राधा। असंगठित क्षेत्र में महिला श्रम और सामाजिक सुरक्षा की चुनौतियाँ। सामाजिक विकास शोध पत्रिका। 2021;8(2):101-115.
22. मेहता पूनम। घरेलू कार्य, लैंगिक विभाजन और महिला श्रमिकों की स्थिति। महिला अध्ययन पत्रिका। 2019;14(1):55-69.
23. राजस्थान सरकार। राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2021–22। जयपुर: वित्त विभाग, राजस्थान सरकार; 2022.
24. भारत सरकार, श्रम ब्यूरो। महिला श्रम शक्ति और रोजगार संबंधी सांख्यिकीय प्रतिवेदन। चंडीगढ़: श्रम ब्यूरो; 2022.
25. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। घरेलू श्रमिकों के लिए गरिमापूर्ण कार्य संबंधी कन्वेंशन, 2011 (संख्या 189)। जिनेवा: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन; 2011.
26. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। घरेलू श्रमिकों और असंगठित क्षेत्र में महिलाओं के रोजगार संबंधी रिपोर्ट एवं अध्ययन। जिनेवा: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन; 2021.
27. बाटलीवाला एस। महिला सशक्तिकरण: दक्षिण एशिया में निगरानी एवं मूल्यांकन की रणनीतियाँ। कुआलालंपुर: एशिया साउथ पैसिफिक ब्यूरो ऑफ एडल्ट एजुकेशन; 1994.
28. कबीर एन। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण की माप पर विचार। डेवलपमेंट एंड चेंज। 1999;30(3):435-464.
29. कोठारी सीआर। शोध पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें। नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स; 2004.
30. शर्मा कुमुद, et al. महिलाएँ, कार्य और सामाजिक परिवर्तन: भारतीय समाज के संदर्भ में एक अध्ययन। 2018.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

Vijay Prakash Meena is a Research Scholar in the Department of Sociology, Faculty of Social Science, University College of Social Sciences and Humanities, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India. His academic interests focus on sociological research, social science studies and gender studies etc.

© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/